नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक : ..... दिनांक : 19.08.2019

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी0जी0 कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में **'युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 50वीं एवं राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की 05 वीं पुण्यतिथि** के पावन स्मृति में आयोजित सप्त दिवसीय व्याख्यान माला के चौथे दिन दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राणि विज्ञान विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष एवं वैज्ञानिक **प्रो. दिनेश कुमार सिंह** ने **''अस्तित्व के केन्द्र से अस्तित्व के केन्द्र तक : ऊर्जा का प्रवाह''** विषय पर बोलते हुए कहा कि **वैदिक विज्ञान आज के आधुनिक विज्ञान से भी अधिक उन्नत है।** आधुनिक विज्ञान के सभी सिद्धान्त वैदिक विज्ञान में उपलब्ध है। जहाँ आधुनिक विज्ञान निरूत्तर है वहॉ वैदिक विज्ञान आगे का द्वारा खोलता दिखाई देता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जो भी दृश्य अथवा अदृश्य सृजन है, वह वास्तव में ऊर्जा के विभिन्न रूपों को प्रदर्शित करता है। इस ऊर्जा का प्रादुर्भाव, विस्तार और विभिन्न प्रकार के सृजनात्मकता में प्रवाह कैसे होता है, इसका पूर्ण ज्ञान केवल वैदिक विज्ञान में ही दिया गया है। यद्यपि ऊर्जा का प्रवाह विभिन्न प्रकार के सृजन में किस प्रकार होता है, इसका उत्तर आधुनिक विज्ञान की इच्छा से ही दे पाता है। ओम के नाद से ओम् रश्मियों निकलती हैं, जिनके प्रकृति से मिलने पर काल तत्व का सक्रिय होना और प्रकृति के प्रारम्भिक अवस्थाओं में हलचल उत्पन्न होने से विभिन्न प्रकार की रश्मियाँ जैसे मरूद रश्मियाँ, प्राण रश्मियाँ, छन्द रश्मियाँ आदि का उत्पन्न होना होता है। इस प्रकार **ऊर्जा का ध्वनि रूप में प्रादुर्भाव ही विभिन्न वैदिक ऋचाओं की संरचना करती है।**

प्रो0 दिनेश कुमार सिंह ने आगे कहा कि वैदिक परम्परा का आधार पूर्ण ज्ञान का उपयोग प्रयोगात्मक रूप में करके ब्रह्माणीय यथार्थ से परिचित होना है। वेदों में भाव पूर्ण ज्ञान, जो मनुष्यों को किस प्रकार इस ब्रह्माण्ड में रहना है, का आदेश प्रदान करता है। वेदों में उल्लेखित इन्हीं ज्ञान के आधार पर हमारे ऋषि–महर्षियों ने बहुत से ब्रह्माण्डीय रहस्यों को आज के परिप्रेक्ष्य में हजारों वर्ष पूर्व ही उद्घाटित कर दिया था। सृष्टि का सृजन कैसे, कब और किस प्रकार से हुआ। इसके बारे में भौतिकी आधुनिक 'यूनिफाइड फील्ड सिद्धान्त' क्वांटम मैकेनिक्स और फील्ड थ्यौरी द्वारा प्रतिवादित किया गया है। ऋग्वेद में सृष्टि के सृजन, विकास को प्राकृतिक तथ्यों के प्रयोग से स्थापित करने का ज्ञान आज से हजारों वर्ष पूर्व ही कर लिया गया था। सृजन का वैदिक ज्ञान वास्तव में प्रकृति के आधारभूत नियम ही हैं और इन्ही नियमों से सृष्टि का सृजन हुआ है।

उन्होंने अपने व्याख्यान में आधुनिक विज्ञान और वैदिक विज्ञान में सिद्धान्तो की समानता पर बोलते हुए कहा कि सृष्टि सृजन में यूनिफाइड फील्ड सिद्धान्त के अनुसार अनन्त शांति के अपरिवर्तनशील क्षेत्र, जिसमें सृजन की अपार, असीमित संभावनाएं है। जिससे गतिशील एवं प्रतिक्षण

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक : ..... दिनांक : 19.08.2019

परिवर्तनशील रचना एक रबर स्ट्रिंग के रूप में उत्पन्न होती है। जिसे सुपरस्ट्रिंग कहते है। वैदिक विज्ञान के अनुसार अपरोक्ष अनन्त शांति के क्षेत्र शिव से परिवर्तनशील शक्ति की रचना होती है। यूनिफाइड फील्ड से जो परिवर्तनशील ऊर्जा निकलती है वह पांच प्रकार की स्पिन होती है। ग्रेविटॉन, ग्रेविटेशन, फोर्स, मैटर एवं हिग्स जो सुपरफील्ड के विभिन्न संयोग से बनते है। उसी प्रकार वैदिक विज्ञान के अनुसार सृष्टि सृजन में सभी भौतिक पदार्थ पांच महाभूतों आकाश, वायु, तेजस, जल एवं पृथ्वी के द्वारा जो तीन दोषों वात, पित्त और कफ के विभिन्न संयोग से उत्पन्न होता है। भौतिक विज्ञान एवं वैदिक विज्ञान दोनों पांच से तीन और तीन से पांच की एक ही प्रकार की सृजन की परम्परा को प्रदर्शित करते है।

इससे पूर्व व्याख्यान कार्यक्रम महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग के प्रवक्ता **डॉ0 सुभाष कुमार गुप्ता** ने **''डिजीटल इण्डिया के बढ़ते कदम''** विषय पर बोलते हुए कहा कि डिजिटल इण्डिया का ध्येय बदलते भारत और बढ़ते भारत की पहचान है। भारत डिजीटल तकनीकि का प्रयोग करने वाला विश्व के अग्रणी देशों में से एक है। डिजिटल तकनीकी भारत में भ्रष्टाचार रोकने का बड़ा साधन बन कर उभरा है। डिजीटल तकनीकी का फैलाव गाँव गरीब जनता तक जितना अधिक बढ़ेगा भारत का विकास भी उतने गति से तीव्र होगा। अर्थव्यवस्था के दृष्टि से भी डिजीटल तकनीकि की भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। डिजीटल इण्डिया से भारत में वर्षो से चली आ बिचौलियों के लूट का खेल अब अन्त हो रहा है। मैन पावर का सद्पयोग डिजीटल तकनीकि के विस्तार के नाते लगातार उन्नत हो रहा है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज पर पुष्पांजलि एवं माँ सरस्वती की अराधना के साथ हुआ। समापन वन्देमातरम् से किया गया। आभार ज्ञापन डॉ0 प्रदीप कुमार राव एवं संचालन नवनीत कुमार ने किया। इस अवसर पर प्रो0 महेश शरण, डॉ0 वेद प्रकाश पाण्डेय, डॉ0 के. सुनीता, पंकज कुमार तथा महाविद्यालय के डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव, दीप्ति गुप्ता, श्वेता चौबे, रचना सिंह, डॉ0 प्रज्ञेश मिश्रा, नन्दन शर्मा, विनय कुमार सिंह, महेन्द्र प्रताप सिंह, सहित सभी शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी